Journal
of the
Oriental Institute
M.S. University of Baroda
ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

मुगल काल में चित्रकला का विकास : एक अध्ययन

डॉ. संतोष कुमार सैनी
असिस्टेंट प्रोफेसर - इतिहास
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय ओबरा,
सोनभद्र (उत्तर प्रदेश)

संक्षेप

"मुगल काल में चित्रकला का विकास : एक अध्ययन" विषय पर यह शोध भारतीय चित्रकला के उस स्वर्णिम युग की विस्तृत व्याख्या करता है, जब कला ने दरबार से निकलकर समाज की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बनना शुरू किया। मुगल शासकों ने चित्रकला को राजकीय संरक्षण प्रदान किया, जिससे चित्रों में यथार्थवाद, प्राकृतिक सौंदर्य, भावनात्मक अभिव्यक्ति और सूक्ष्म कलात्मकता का अद्भुत समन्वय देखने को मिला। इस अध्ययन में चित्रकला की उत्पत्ति, प्रमुख चित्रशालाएँ, विशिष्ट कलाकार, तकनीकी विशेषताएँ एवं विषयवस्तु की विविधता का गहन विश्लेषण किया गया है। साथ ही यह शोध मुगल चित्रकला के सांस्कृतिक प्रभावों एवं उसकी समकालीन और आधुनिक भारतीय कला पर पड़ने वाले प्रभाव को भी उजागर करता है। यह अध्ययन इस बात को स्थापित करता है कि मुगल चित्रकला भारतीय कलात्मक परंपरा की एक महत्वपूर्ण विरासत है, जो आज भी अपने सौंदर्यबोध और ऐतिहासिक महत्त्व के कारण प्रासंगिक बनी हुई है।

सूचक शब्दः मुगल चित्रकला, दरबारी कला, भारतीय चित्रशैली, अकबरनामा चित्रण, लघुचित्र परंपरा

प्रस्तावना

भारतवर्ष का इतिहास विविध सांस्कृतिक, धार्मिक एवं कलात्मक परंपराओं से समृद्ध रहा है, जिनमें चित्रकला का एक विशेष स्थान रहा है। मुगल काल, जो कि 16वीं शताब्दी के मध्य से लेकर 18वीं शताब्दी के प्रारंभ तक फैला हुआ था, भारतीय चित्रकला के विकास का एक स्वर्णिम युग माना जाता है। यह काल केवल राजनीतिक स्थिरता और प्रशासनिक संरचना के लिए ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक नवजागरण और कलात्मक उत्कर्ष के लिए भी प्रसिद्ध है। बाबर से लेकर औरंगज़ेब तक के मुगल शासकों ने न केवल युद्ध और शासन में दिलचस्पी ली, बल्कि कला और संस्कृति के संरक्षण एवं संवर्द्धन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। विशेषतः

ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

चित्रकला को शाही संरक्षण प्राप्त हुआ, जिससे यह दरबारी सीमाओं से निकलकर सामाजिक और धार्मिक जीवन का अभिन्न अंग बन गई। [1]

इस काल की चित्रकला फारसी, तुर्की और भारतीय शैलियों के अद्भुत सम्मिलन का परिणाम थी, जिसने एक नवीन और परिष्कृत शैली को जन्म दिया, जिसे "मुगल चित्रशैली" के नाम से जाना गया। मुगल चित्रकला में यथार्थवाद, प्रकृति का सूक्ष्म अवलोकन, भावनाओं की अभिव्यक्ति तथा रंगों की बारीकी से प्रयोग जैसे गुणों ने इसे वैश्विक स्तर पर प्रशंसा दिलाई। यह चित्रकला मुख्यतः पांडुलिपियों में चित्रांकन, दरबारी दृश्यों, युद्धों, प्रेम कथाओं और धार्मिक आख्यानों को दर्शाने में प्रयुक्त होती थी। मुगलों के चित्रशालाओं में कार्यरत चित्रकारों ने न केवल तकनीकी दक्षता प्रदर्शित की बल्कि सौंदर्यबोध, प्रतीकात्मकता और विषय-वस्तु में भी गहराई प्रदान की। इस शोध अध्ययन का उद्देश्य मुगल कालीन चित्रकला की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, प्रमुख प्रवृत्तियाँ, कलाशैली, कलाकारों एवं उनके योगदान का समग्र विश्लेषण करना है। साथ ही यह अध्ययन यह भी स्पष्ट करेगा कि किस प्रकार मुगल चित्रकला ने न केवल भारतीय कला जगत को समृद्ध किया बल्कि आने वाली चित्रशैलियों पर भी गहरा प्रभाव डाला। यह शोध भारतीय चित्रकला के इतिहास में एक महत्वपूर्ण अध्याय को समझने और उसकी सांस्कृतिक महत्ता को पुनर्स्थापित करने का प्रयास है।

अध्ययन का उद्देश्य

इस शोध का प्रमुख उद्देश्य मुगल काल में चित्रकला के विकास की प्रक्रिया, प्रवृत्तियों एवं प्रभावों का समग्र विश्लेषण प्रस्तुत करना है। मुगल शासनकाल के दौरान चित्रकला केवल दरबारी मनोरंजन तक सीमित नहीं

ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

रही बल्कि वह सांस्कृतिक अभिव्यक्ति, धार्मिक प्रस्तुति और ऐतिहासिक दस्तावेजीकरण का माध्यम भी बनी। यह अध्ययन यह स्पष्ट करना चाहता है कि किस प्रकार मुगल शासकों ने चित्रकला को संरक्षण प्रदान कर उसे एक समृद्ध कलात्मक परंपरा में परिवर्तित किया। साथ ही, चित्रकला में प्रयुक्त शैलियों, रंगों, तकनीकों तथा विषयवस्तु की विविधता को समझना भी इस अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य है। इस शोध के माध्यम से चित्रकला में कार्यरत प्रमुख चित्रकारों के योगदान को रेखांकित किया जाएगा और यह जांचा जाएगा कि मुगल चित्रशैली ने भारतीय चित्रकला की समग्र परंपरा में क्या स्थान अर्जित किया। अध्ययन यह भी दर्शाना चाहता है कि मुगल चित्रकला किस प्रकार आज के सांस्कृतिक और कलात्मक विमर्श में प्रासंगिक बनी हुई है।[2]

मुगल काल का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

मुगल काल भारतीय इतिहास का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और समृद्ध युग था, जिसकी शुरुआत 1526 ई॰ में बाबर द्वारा पानीपत के प्रथम युद्ध में इब्राहीम लोदी को पराजित कर की गई। इसके साथ ही भारत में मुगल साम्राज्य की स्थापना हुई, जिसने आने वाले लगभग ढाई सौ वर्षों तक भारतीय उपमहाद्वीप पर शासन किया। बाबर के बाद हुमायूं, अकबर, जहाँगीर, शाहजहाँ और औरंगज़ेब जैसे प्रमुख शासकों ने साम्राज्य को न केवल सैन्य और प्रशासनिक दृष्टि से सुदृढ़ किया बल्कि सांस्कृतिक, धार्मिक और कलात्मक दृष्टि से भी भारत को एक नई दिशा दी। विशेषकर अकबर, जहाँगीर और शाहजहाँ के शासनकाल को सांस्कृतिक पुनर्जागरण का युग कहा जाता है, जब चित्रकला, स्थापत्य, संगीत, साहित्य और शिक्षा जैसे क्षेत्रों में अद्वितीय विकास हुआ।[3]

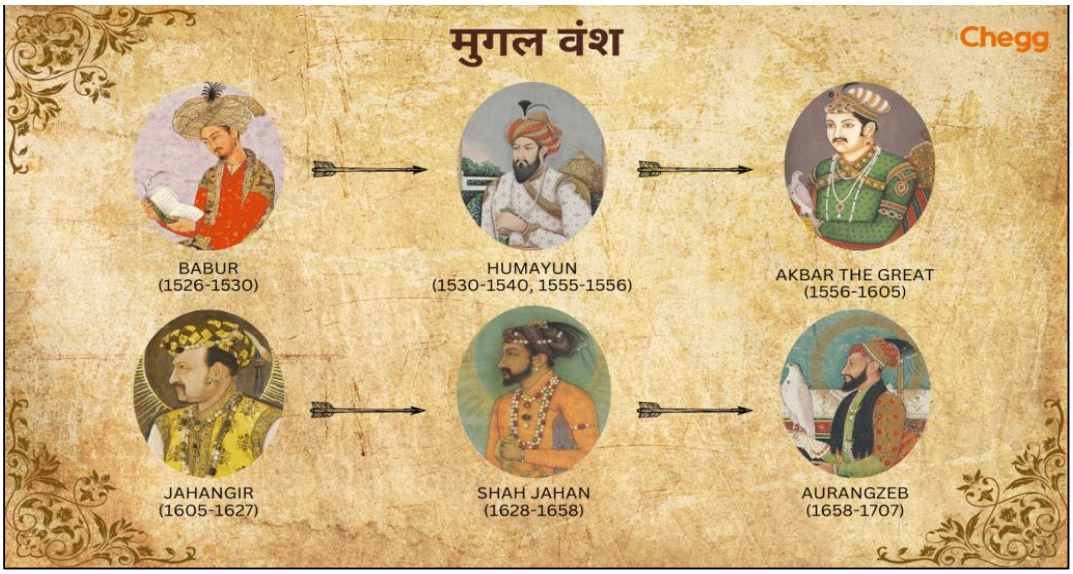

ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

इन शासकों ने फारसी, भारतीय और मध्य एशियाई कलाओं का समावेश करते हुए एक नई मुगल शैली की नींव रखी, जो विविधता में एकता और कलात्मक उत्कृष्टता का प्रतीक बनी। उन्होंने कलाकारों, शिल्पकारों, कवियों और विद्वानों को संरक्षण प्रदान किया, जिससे दरबार न केवल राजनीतिक गतिविधियों का केंद्र बना, बल्कि सांस्कृतिक उन्नयन का भी केंद्रबिंदु बन गया। मुगल दरबार की कलाप्रियता इतनी प्रबल थी कि उन्होंने न केवल भव्य महलों, किलों और बागों का निर्माण कराया, बल्कि चित्रकला को भी शाही संरक्षण देकर लघुचित्र परंपरा को संस्थागत रूप प्रदान किया। विशेषकर अकबर ने एक चित्रशाला की स्थापना की, जहाँ सैकड़ों चित्रकार कार्यरत थे, जो ऐतिहासिक ग्रंथों, धार्मिक आख्यानों और दरबारी जीवन को चित्रों के माध्यम से जीवंत करते थे। जहाँगीर ने चित्रकला में यथार्थवाद और प्रकृति चित्रण को प्रोत्साहित किया, जबकि शाहजहाँ के काल में चित्रकला में सजावट और विलासिता की झलक दिखाई देती है। मुगलों की यह कलाप्रियता केवल दरबार तक सीमित नहीं रही, बल्कि सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन में भी गहराई से समाहित हो गई। उन्होंने भारतीय कला और संस्कृति को वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस प्रकार मुगल काल का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य केवल सत्ता और युद्ध तक सीमित नहीं था, बल्कि एक व्यापक सांस्कृतिक आंदोलन का वाहक था, जिसने भारतीय चित्रकला के विकास को एक नई ऊँचाई प्रदान की और एक ऐसी बहुस्तरीय परंपरा को जन्म दिया, जो आज भी अध्ययन और अनुसंधान का प्रमुख विषय बनी हुई है।[4]

मुगल चित्रकला की उत्पत्ति और प्रेरणाएँ

मुगल चित्रकला की उत्पत्ति एक बहुस्तरीय और बहुसांस्कृतिक प्रक्रिया का परिणाम थी, जिसमें विभिन्न कलात्मक परंपराओं का समावेश हुआ। जब बाबर ने भारत में मुगल शासन की नींव रखी, तब वह मध्य एशिया से फारसी और तुर्की सांस्कृतिक प्रभावों को साथ लेकर आया। हुमायूं के समय में, विशेष रूप से उसके ईरान प्रवास के दौरान, वह फारसी दरबार की चित्रकला और स्थापत्य से अत्यंत प्रभावित हुआ और अपने साथ दो प्रसिद्ध फारसी चित्रकार मीर सैय्यद अली और अब्दुस समद को भारत लाया। यही वह क्षण था जब भारतीय चित्रकला के साथ फारसी चित्रशैली का गहन सम्मिलन आरंभ हुआ। बाद में अकबर ने इस शैली को और अधिक संस्थागत रूप देते हुए एक चित्रशाला की स्थापना की, जहाँ तुर्की, फारसी, भारतीय और बौद्ध परंपराओं की विशेषताओं को मिलाकर एक नई शैली 'मुगल चित्रकला' का विकास किया गया। भारतीय चित्रकला की राजस्थानी और बौद्ध अजंता परंपरा से प्राप्त यथार्थ चित्रण, जीवंत रंगों और गहन विवरण की प्रवृत्तियों को फारसी चित्रों की बारीकी, शैलीबद्धता और सूक्ष्मता के साथ समाहित किया गया। तुर्की प्रभावों में सैन्य दृश्यों और वास्तुशिल्प का चित्रण प्रमुख था, जबकि बौद्ध परंपरा से प्रेरणा लेकर चित्रों में सांकेतिकता और नैतिक

ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

संदेश की उपस्थिति भी दिखाई दी। इस चित्रशैली में मुगलों की प्रशासनिक व्यवस्था विशेषतः मनसबदारी प्रणाली का भी योगदान उल्लेखनीय रहा। [5]. मनसबदारों को न केवल प्रशासनिक अधिकार दिए जाते थे, बल्कि उन्हें सांस्कृतिक संरक्षण की जिम्मेदारी भी दी जाती थी। वे कलाकारों, शिल्पकारों और साहित्यकारों को संरक्षण देते थे, जिससे कला और संस्कृति का समग्र विकास संभव हुआ। कई मनसबदार स्वयं कलाप्रेमी होते थे और अपने अधीन चित्रशालाओं की स्थापना करते थे, जहाँ चित्रकला को प्रोत्साहन मिलता था। यह संरचना चित्रकारों को न केवल आर्थिक सुरक्षा प्रदान करती थी, बल्कि उन्हें प्रयोग और नवाचार के लिए एक मुक्त वातावरण भी देती थी। परिणामस्वरूप, मुगल चित्रकला में विषयों की विविधता, यथार्थ और कल्पना का सुंदर समन्वय, रंगों की संतुलित योजना तथा भावनात्मक गहराई दिखाई देने लगी। मुगल चित्रकला की उत्पत्ति इस प्रकार एक परंपरा नहीं, बल्कि परंपराओं का संगम थी, जो भारत की बहुलतावादी संस्कृति और मुगलों की कलाप्रियता को दर्शाने वाली एक उत्कृष्ट कलात्मक धरोहर के रूप में उभरी।[6]

प्रारंभिक मुगल चित्रकला का स्वरूप

प्रारंभिक मुगल चित्रकला मुगल साम्राज्य की स्थापना के समय की राजनीतिक अस्थिरता, सांस्कृतिक मेल-जोल और कलात्मक प्रयोगशीलता का परिणाम थी। बाबर ने चित्रकला को प्रत्यक्ष रूप से बढ़ावा नहीं दिया, पर उसकी आत्मकथा "तुजुक-ए-बाबरी" में वर्णित दृश्यों ने भविष्य की चित्रकला को प्रेरित किया। हुमायूं के फारस प्रवास के दौरान वह फारसी चित्रकला से प्रभावित हुआ और दो प्रमुख चित्रकार मीर सैय्यद अली और अब्दुस समद को भारत लाया। इन्होंने प्रारंभिक मुगल चित्रशैली की नींव रखी। इस दौर के चित्रों में फारसी प्रभाव, सीमित रंग योजना, समतल पृष्ठभूमि और पुष्प अलंकरण की विशेषताएँ थीं। धार्मिक, मिथकीय और दरबारी विषयों पर आधारित चित्रों में भारतीय और फारसी शैलियों का समन्वय किया गया। यह चरण मुगल चित्रकला की भविष्य की समृद्ध परंपरा का आधार बना।[7]

चित्रकला के उत्कर्ष का काल: अकबर से औरंगज़ेब तक

मुगल चित्रकला का वास्तविक उत्कर्ष अकबर से लेकर औरंगज़ेब तक के कालखंड में देखा गया, जब चित्रकला को शाही संरक्षण, संगठित ढांचा, कुशल चित्रकारों का समूह और नवीन विषयवस्तु का सहारा मिला। इस काल को भारतीय चित्रकला का स्वर्ण युग कहा जा सकता है क्योंकि इसमें चित्रकला केवल सजावट का माध्यम न रहकर इतिहास, संस्कृति और समाज की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बन गई।

अकबर काल में चित्रकला का सुनियोजित विकास

ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

अकबर (1556-1605) के शासनकाल में चित्रकला को शाही प्रोत्साहन और संस्थागत ढाँचा प्राप्त हुआ। उसने फतेहपुर सीकरी और आगरा में चित्रशालाएँ स्थापित कीं और भारत तथा फारस के अनेक चित्रकारों को नियुक्त किया। अकबर का उद्देश्य भारतीय सांस्कृतिक विविधता को चित्रों के माध्यम से अभिव्यक्त करना था। उसने पांडुलिपियों को सचित्र बनाने का कार्य प्रारंभ करवाया, जिनमें प्रमुख हैं - हम्ज़ानामा, *अकबरनामा*, *रामायण*, *महाभारत*, *रज़्मनामा* आदि। इन ग्रंथों के सचित्र संस्करणों ने साहित्य और कला को एकीकृत किया। अकबर ने चित्रकारों की टीम तैयार की जिसमें हिंदू और मुस्लिम दोनों चित्रकारों को स्थान मिला जैसे- बसावन, मंसूर, फर्रुख वेग, केसव आदि। इन कलाकारों ने भारतीय यथार्थवाद को फारसी बारीकी और सजावटीपन के साथ मिलाकर एक नवीन चित्रशैली का निर्माण किया। उनके चित्रों में मानव आकृतियों की सजीवता, प्राकृतिक पृष्ठभूमि का प्रयोग, भावनाओं की स्पष्टता और रंग संयोजन की सुंदरता स्पष्ट दिखाई देती है।

जहाँगीर काल: प्राकृतिक चित्रण एवं यथार्थवाद का चरम

जहाँगीर (1605–1627) का काल मुगल चित्रकला में यथार्थवाद और प्रकृति चित्रण के उत्कर्ष के रूप में देखा जाता है। जहाँगीर स्वयं चित्रकला का पारखी था और उसने कलाकारों को विशिष्टता के आधार पर पुरस्कृत किया। इस काल में चित्रों में प्राकृतिक दृश्य, पशु-पक्षी, फूल-पत्तियाँ, पक्षियों की प्रजातियाँ और मानव चेहरों का यथार्थ चित्रण किया गया। प्रसिद्ध चित्रकार मंसूर ने पक्षियों और जानवरों के सजीव चित्र बनाए जिन्हें जहाँगीर ने अत्यधिक सराहा। इस काल की विशेषता यह थी कि चित्रों में अलंकरण के बजाय गहराई, प्रकाश-छाया और यथार्थता पर बल दिया गया। चित्रों में पोर्ट्रेट शैली विकसित हुई और व्यक्तियों के चेहरे के हाव-भाव और भंगिमाओं को अत्यंत कुशलता से चित्रित किया गया।[8]

शाहजहाँ काल: सजावटी शैली और वास्तुशिल्प के साथ चित्रकला

शाहजहाँ (1628–1658) के समय में चित्रकला में शाही भव्यता, विलासिता और सजावटी सौंदर्य का प्रवेश हुआ। इस काल में चित्रों में संगमरमर की वास्तुशिल्पीय संरचनाएँ, भव्य वस्त्र, आभूषण, उत्सव दृश्य और प्रेम प्रसंगों का विस्तृत चित्रण हुआ। शाहजहाँ का काल स्थापत्य के लिए प्रसिद्ध रहा । ताजमहल इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है और इसका प्रभाव चित्रकला में भी परिलक्षित होता है। चित्रों में रंगों का अधिक परिष्कृत प्रयोग, फूलों की डिज़ाइन, मोनोग्राम्स और मीनाकारी जैसे सजावटी तत्व शामिल किए गए। इस काल में धार्मिक विषयों की तुलना में दरबारी जीवन, उत्सव, प्रेम और संगीत जैसे विषय अधिक चित्रित हुए। चित्रों में संरचना और रूपांकन अत्यंत संतुलित तथा सजावटी होते चले गए, जिससे चित्रकला का सौंदर्यशास्त्रिक पक्ष अधिक उन्नत हुआ।

ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

औरंगज़ेब काल: पतन की ओर प्रवृत्ति

औरंगज़ेब (1658–1707) का काल मुगल चित्रकला के पतन की शुरुआत के रूप में देखा जाता है। जहाँ उसके पूर्वजों ने चित्रकला को संरक्षण और प्रोत्साहन दिया, वहीं औरंगज़ेब की धार्मिक प्रवृत्तियों और इस्लामी रूढ़िवादिता के कारण कला को दरबार में अपेक्षित सम्मान नहीं मिला। उसने दरबारी चित्रशालाओं को समाप्त कर दिया और चित्रकारों को शाही संरक्षण से वंचित कर दिया, जिससे चित्रकला दरबार से बाहर जाकर क्षेत्रीय दरबारों और स्वतंत्र चित्रकारों तक सीमित हो गई। यद्यपि इस काल में कुछ निजी चित्रण कार्य सीमित मात्रा में होते रहे, किंतु चित्रकला की गति और गुणवत्ता में स्पष्ट गिरावट देखी गई। फिर भी यह समय भारतीय चित्रकला के लिए अंत नहीं था; मुगल शैली के प्रभाव में राजस्थानी, पहाड़ी और अन्य स्थानीय चित्रशैलियों ने नयी ऊर्जा प्राप्त की और आगे चलकर स्वतंत्र पहचान बनाई।

इस प्रकार, अकबर से औरंगज़ेब तक का काल मुगल चित्रकला के विकास, उत्कर्ष और फिर धीरे-धीरे पतन की गाथा कहता है। यह कालचित्र न केवल कलात्मक उपलब्धियों का प्रतीक है, बल्कि भारत के सांस्कृतिक इतिहास का महत्वपूर्ण अध्याय भी है, जिसने चित्रकला को केवल सजावट नहीं, बल्कि अभिव्यक्ति और बौद्धिक संवाद का माध्यम बनाया।[9]

प्रमुख चित्रशालाएँ और कलाशैली

मुगल काल में चित्रकला के संस्थागत विकास में चित्रशालाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही। मुगल शासकों ने शाही दरबार में चित्रशालाएँ स्थापित कर चित्रकारों को संगठित किया और एक सुव्यवस्थित प्रणाली के अंतर्गत कलात्मक कृतियों का निर्माण करवाया। इन चित्रशालाओं ने न केवल चित्रकला को संरक्षित किया बल्कि उसकी गुणवत्ता, विविधता और परंपरा को भी सुदृढ़ किया। साथ ही, प्रत्येक शासक की कलात्मक रुचि के अनुसार चित्रशालाओं में चित्रशैली में विविधता आई, जो मुगल कलाशैली के विभिन्न चरणों को परिभाषित करती है।[10]

प्रमुख चित्रशालाएँ

अकबर के शासनकाल में स्थापित चित्रशाला सबसे प्रमुख मानी जाती है। उसने लगभग सौ से अधिक चित्रकारों को नियुक्त किया, जिनमें हिंदू और मुस्लिम दोनों समुदायों के कलाकार शामिल थे। यह चित्रशाला फतेहपुर सीकरी और बाद में आगरा में स्थित थी, जहाँ ऐतिहासिक ग्रंथों जैसे *अकबरनामा*, *रज़्मनामा*, *रामायण*,

ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

महाभारत, *आईन-ए-अकबरी* आदि के सचित्र संस्करण तैयार किए गए। इसके बाद जहाँगीर के काल में चित्रशाला अधिक परिष्कृत हुई, जिसमें प्राकृतिक चित्रण, यथार्थवाद और व्यक्तिवादी शैली पर बल दिया गया। उसने व्यक्तिगत चित्रकारों को सम्मान दिया और स्वतंत्र कार्य की अनुमति दी। मंसूर, बिशनदास और गोवर्धन जैसे चित्रकारों ने जहाँगीर की चित्रशाला में उत्कृष्ट कृतियाँ प्रस्तुत कीं। शाहजहाँ के काल में चित्रशालाओं ने भव्यता, वास्तुशिल्पीय सौंदर्य और दरबारी भव्यता को केंद्र में रखते हुए चित्रों का निर्माण किया। ताजमहल और अन्य स्थापत्य कृतियों के साथ-साथ चित्रशाला ने भी अपने चित्रों में सजावटी शैली को अपनाया। औरंगज़ेब के समय में यद्यपि चित्रशालाओं का पतन हुआ, फिर भी कुछ मनसबदारों और प्रांतीय दरबारों में लघु चित्रकला का कार्य जारी रहा।[11]

मुगल कलाशैली की विशेषताएँ

मुगल चित्रशैली में फारसी सूक्ष्मता, भारतीय यथार्थवाद और तुर्की समरूपता का सुंदर समन्वय देखने को मिलता है। इसमें चेहरे के भावों की सजीवता, परिधानों की बारीक चित्रण, रंगों की गहराई और पृष्ठभूमि में वास्तु व प्रकृति का सुंदर संयोजन प्रमुख रूप से दृष्टिगोचर होता है। चित्रों में दरबारी दृश्य, युद्ध, प्रेम प्रसंग, धार्मिक आख्यान, पशु-पक्षियों और प्राकृतिक तत्वों का अत्यंत सजीव चित्रण किया जाता था। कला में लयात्मकता, भाव-भंगिमा और संतुलन का विशेष ध्यान रखा जाता था। इस शैली ने न केवल मुगल दरबार की गरिमा को चित्रित किया, बल्कि भारतीय चित्रकला को एक नये वैश्विक सौंदर्यशास्त्र से जोड़ने का कार्य भी किया।

महत्वपूर्ण चित्रकार और उनकी कृतियाँ

मुगल काल की चित्रकला का वैभव उसके उत्कृष्ट चित्रकारों और उनकी अनुपम कृतियों में निहित है, जिन्होंने शाही संरक्षण में काम करते हुए चित्रकला को एक नई ऊँचाई प्रदान की। इन चित्रकारों ने धार्मिक ग्रंथों, ऐतिहासिक दस्तावेजों, दरबारी जीवन और प्रकृति के विषयों पर ऐसी चित्रकृतियाँ बनाई जो आज भी भारतीय कला की अमूल्य धरोहर मानी जाती हैं।

बसावन मुगल चित्रकला के सबसे प्रतिभाशाली चित्रकारों में से एक थे, जो विशेष रूप से अकबर के शासनकाल में सक्रिय थे। वे चेहरे के हाव-भाव और भावनात्मक अभिव्यक्ति को चित्रित करने में दक्ष थे। *अकबरनामा*, *रज़्मनामा* (महाभारत का फारसी अनुवाद) और *रामायण* के सचित्र संस्करणों में उनके बनाए

ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

चित्र प्रमुख रूप से शामिल हैं। उन्होंने भारतीय यथार्थवाद को फारसी सूक्ष्म शैली के साथ मिलाकर चित्रकला में एक नया सौंदर्यबोध विकसित किया।

दसवंत, एक और प्रमुख चित्रकार, अकबर की चित्रशाला के पहले हिंदू कलाकारों में से थे, जिन्होंने फारसी शैली को आत्मसात कर अत्यंत प्रभावशाली चित्र बनाए। उन्होंने *हम्ज़ानामा* जैसे महाग्रंथ में चित्रों का निर्माण किया और उनके चित्रों में गहन रंग योजना, बारीक डिज़ाइन और नाटकीयता देखने को मिलती है। दसवंत को अकबर ने विशेष रूप से सम्मानित किया था और उन्हें कई महत्वपूर्ण प्रोजेक्ट्स का नेतृत्व सौंपा गया था।

उस्ताद मंसूर, जहाँगीर के शासनकाल में प्रकृति चित्रण और यथार्थवाद के लिए प्रसिद्ध थे। उन्होंने पक्षियों, जानवरों और वनस्पतियों के जीवंत और सजीव चित्र बनाए। मंसूर के बनाए *साइबेरियन सारस*, *नीलकंठ*, *हाथी* और *मोर* के चित्र अद्वितीय यथार्थता के लिए विख्यात हैं। जहाँगीर ने उन्हें "नादिर-उल-अस्र" (समय का अनोखा व्यक्ति) की उपाधि दी थी।

फत्तु और **फरदउद्दीन** भी मुगल दरबार के सम्मानित चित्रकार थे, जिन्होंने धार्मिक ग्रंथों के सचित्र संस्करणों पर कार्य किया। *रामायण*, *अकबरनामा*, *जहाँगीरनामा* जैसी महत्त्वपूर्ण कृतियों में उनके योगदान उल्लेखनीय रहे। इन चित्रकारों ने शाही जीवन, युद्ध, प्रेम प्रसंगों, राजसी समारोहों और धार्मिक आख्यानों को अत्यंत कलात्मक ढंग से चित्रित किया।

इन चित्रकारों की रचनाएँ केवल सौंदर्य का प्रतीक नहीं हैं, बल्कि वे उस काल के समाज, संस्कृति, राजनीति और धर्म के प्रतिबिंब भी हैं। उनकी कृतियाँ आज भी संग्रहालयों और ऐतिहासिक ग्रंथों में सुरक्षित हैं और मुगल चित्रकला की उन्नति की साक्षी हैं।[12]

मुगल चित्रकला की विशिष्टताएँ

मुगल चित्रकला की विशिष्टताएँ ही उसे भारतीय चित्रकला की अन्य शैलियों से अलग पहचान प्रदान करती हैं। यह शैली फारसी, तुर्की, भारतीय और बौद्ध प्रभावों के समन्वय से विकसित हुई, जिसमें सौंदर्यबोध, तकनीकी कौशल और विषयवस्तु की गहराई का अद्वितीय संगम दिखाई देता है। इसकी पहली विशेषता रंगों के संयमित और परिष्कृत प्रयोग में दिखती है—नीला, लाल, हरा, सुनहरा आदि रंगों से चित्रों को जीवंतता और गहराई मिली। दूसरी विशिष्टता यथार्थ चित्रण और भाव-भंगिमा की उत्कृष्टता है, जिसमें मानव आकृतियों के भाव, हाव-भाव और मुखमुद्राओं को अत्यंत सजीव रूप में दर्शाया गया है। तीसरी विशेषता स्थापत्य, पोशाक और प्रकृति का सूक्ष्म चित्रण है—मुगल इमारतें, वस्त्रों की तहें, ज़री का काम, बाग-बग़ीचे, पशु-पक्षी, फूल-पत्तियाँ

ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

और प्राकृतिक दृश्य अत्यंत बारीकी से अंकित किए गए हैं, विशेषकर जहाँगीर काल में प्रकृति चित्रण में वैज्ञानिक और सौंदर्यपूर्ण दृष्टिकोण अपनाया गया। इन सब कारणों से मुगल चित्रकला केवल एक कला माध्यम नहीं, बल्कि अपने समय की संस्कृति, इतिहास और मनोविज्ञान का सजीव दस्तावेज़ बन गई।[13]

चित्रकला का सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभाव

मुगल कालीन चित्रकला केवल शाही दरबार या राजप्रासादों तक सीमित नहीं रही, बल्कि उसने तत्कालीन समाज के विविध आयामों को प्रभावित करते हुए एक समृद्ध सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभाव स्थापित किया। इस काल की चित्रकला ने न केवल सौंदर्य का सृजन किया, बल्कि लोक जीवन, साहित्य और संगीत के साथ घनिष्ठ संबंध स्थापित कर बहुआयामी अभिव्यक्ति का माध्यम भी बन गई। सबसे पहले यदि लोक जीवन में चित्रकला की भूमिका की बात करें तो यह स्पष्ट होता है कि मुगल चित्रकला ने आमजन के सांस्कृतिक सोच और दृश्य सौंदर्य की धारणा को परिवर्तित किया। दरबार में उत्पन्न चित्रशैली धीरे-धीरे क्षेत्रीय दरबारों, जागीरों, मंदिरों और घरों तक पहुँची, जिससे जनमानस में चित्रों के प्रति आकर्षण और समझ बढ़ी। चित्रों में दरबारी जीवन, उत्सव, वसंत ऋतु, नृत्य, संगीत, प्रेम प्रसंग, धार्मिक अनुष्ठान तथा पारिवारिक क्षणों को जिस तरह जीवंत रूप में प्रस्तुत किया गया, उसने सामान्य लोगों को भी कला के प्रति जागरूक बनाया। विशेषतः प्रेम, प्रकृति और मानवीय संबंधों के चित्रण ने लोककथाओं और सामाजिक व्यवहारों में नई कल्पनाशक्ति भर दी। ग्रामीण क्षेत्रों में, जहाँ दीवार चित्रण और लोक कलाएं पहले से प्रचलित थीं, वहाँ मुगल शैली की सजावटी प्रवृत्तियाँ, रंग संयोजन और प्रतीकात्मकता ने प्रेरणा प्रदान की।[14]

चित्रकला ने साहित्य और संगीत को भी गहराई से प्रभावित किया। अनेक पांडुलिपियाँ जैसे *रामायण*, *महाभारत*, *शाहनामा*, *हम्ज़ानामा*, *अकबरनामा* और *जहाँगीरनामा* आदि को चित्रों के माध्यम से सजीव बनाया गया, जिससे साहित्य के वर्णनों को दृष्टिगत रूप में प्रस्तुत करने की परंपरा विकसित हुई। इससे पठन-पाठन की प्रक्रिया में दृश्य कल्पना का समावेश हुआ, जिसने साहित्य को अधिक सुलभ और आकर्षक बना दिया। चित्रों में काव्य की पंक्तियों, कथा के दृश्यों और पात्रों के भावों को इतनी कुशलता से उकेरा गया कि एक शब्दहीन संवाद जन्म लेने लगा। साहित्यिक पात्रों की कल्पना को साकार करने में चित्रों ने निर्णायक भूमिका निभाई। संगीत के क्षेत्र में भी चित्रकला का प्रभाव गहरा रहा। मुगल चित्रों में राग-रागिनियों, संगीतकारों, वाद्ययंत्रों और दरबारी गायन सभाओं के दृश्य अत्यंत लोकप्रिय हुए। रागमाला श्रृंखला जैसे चित्रों में संगीत के भावों को रंगों, आकृतियों और प्रकृति के माध्यम से व्यक्त किया गया, जिससे संगीत को सुनने के साथ देखने का भी अनुभव हुआ। चित्रों में संगीतकारों की मुद्राएँ, वाद्ययंत्रों की बारीकी और संगीत सभा की मनोवृत्तियाँ इतनी सजीव होती थीं कि वे

ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

संगीत की आत्मा को चित्र में बाँध देती थीं। इससे चित्रकला और संगीत के बीच एक आत्मिक संबंध स्थापित हुआ।

इस प्रकार, मुगल चित्रकला का सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभाव बहुआयामी और गहरा था। इसने न केवल कला को शाही चौहद्दियों से बाहर निकाल कर आमजन तक पहुँचाया, बल्कि साहित्य, संगीत, लोक जीवन और सांस्कृतिक चेतना में भी नई दृष्टि और रंग भर दिए। यह चित्रकला भारतीय समाज की सांस्कृतिक आत्मा की दर्पण बन गई, जिसने न केवल अपने समय को चित्रित किया, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए सांस्कृतिक स्मृति और सौंदर्यबोध की एक अमूल्य विरासत भी छोड़ दी।[15]

चित्रकला संरक्षण और संग्रहालयों में स्थिति

मुगल कालीन चित्रकला भारतीय सांस्कृतिक धरोहर का एक अनमोल हिस्सा है, जिसे संरक्षित करना न केवल एक कलात्मक दायित्व है बल्कि इतिहास और सभ्यता के संरक्षण का भी कार्य है। यद्यपि समय के साथ कई चित्र लुप्त या क्षतिग्रस्त हो चुके हैं, फिर भी भारत सरकार और विभिन्न संस्थानों द्वारा अनेक प्रयास किए गए हैं, ताकि इन चित्रों को सुरक्षित रखा जा सके और आने वाली पीढ़ियों तक इनकी कलात्मक गरिमा को पहुँचाया जा सके। चित्रों के संरक्षण की दिशा में सबसे बड़ा योगदान संग्रहालयों का रहा है, जो इन ऐतिहासिक कृतियों को प्रदर्शित करने, संग्रहित करने तथा शोध के लिए उपलब्ध कराने का कार्य करते हैं।

निष्कर्ष

"मुगल काल में चित्रकला का विकास : एक अध्ययन" विषय पर आधारित यह शोध इस बात को स्पष्ट रूप से प्रमाणित करता है कि मुगल काल भारतीय चित्रकला के इतिहास में एक स्वर्णिम युग रहा, जिसमें कला ने राजसत्ता के संरक्षण में न केवल अभूतपूर्व उन्नति प्राप्त की, बल्कि भारतीय संस्कृति, साहित्य, संगीत और स्थापत्य के साथ मिलकर एक समृद्ध कलात्मक परंपरा का निर्माण किया। बाबर और हुमायूं के काल में जहां इस चित्रकला की नींव पड़ी, वहीं अकबर, जहाँगीर और शाहजहाँ के काल में यह अपने उत्कर्ष पर पहुँची। अकबर द्वारा चित्रशाला की स्थापना, हिंदू-मुस्लिम चित्रकारों का समावेश, धार्मिक ग्रंथों के सचित्र संस्करण और दरबारी जीवन के जीवंत चित्रण ने इस शैली को बहुआयामी बना दिया। जहाँगीर ने यथार्थवाद और प्रकृति चित्रण को नया आयाम दिया, जबकि शाहजहाँ के काल में चित्रकला ने सजावटी सौंदर्य और स्थापत्य के साथ सामंजस्य स्थापित किया। यद्यपि औरंगज़ेब के शासनकाल में इस कला का शाही संरक्षण क्षीण हुआ, फिर भी इसकी परंपरा समाप्त नहीं हुई, बल्कि राजस्थानी, पहाड़ी और अन्य क्षेत्रीय शैलियों में प्रवाहित होकर जीवित

ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

रही। मुगल चित्रकला की विशेषताएँ जैसे- रंगों का प्रयोग, यथार्थ चित्रण, भाव-भंगिमा, वास्तुशिल्पीय पृष्ठभूमि और सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभाव इसे एक अद्वितीय कला शैली के रूप में स्थापित करती हैं। यह चित्रकला न केवल सौंदर्य का प्रतीक है, बल्कि इतिहास, समाज और संस्कृति का दर्पण भी है। अतः मुगल चित्रकला की परंपरा आज भी संग्रहालयों, शोध और कलात्मक विमर्श में जीवंत बनी हुई है।

संदर्भ

1. वर्मा, एस. पी. (2000, जनवरी)। *मुगल चित्रकला, आश्रयदाता और चित्रकार*। भारतीय इतिहास कांग्रेस की कार्यवाही, खंड 61, पृष्ठ 510–526। भारतीय इतिहास कांग्रेस।
2. स्ट्रॉन्ग, सुसान। (2002)। *मुगल सम्राट के लिए चित्रण: 1560–1660 की पुस्तक कला*। लंदन: विक्टोरिया एंड एल्बर्ट संग्रहालय प्रकाशन।
3. एबा कोच। (2001)। *मुगल कला और सम्राटीय विचारधारा: संकलित निबंध*। नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
4. बीच, माइलो सी. (2008)। *मुगल और राजपूत चित्रकला*। *द ग्रोव विश्वकोश: इस्लामी कला एवं वास्तुकला* में। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
5. लॉस्टी, जे. पी. (2005)। *मुगल भारत: कला, संस्कृति और साम्राज्य*। ब्रिटिश लाइब्रेरी प्रकाशन।
6. बिन्नी, एडविन। (2004)। *भारतीय लघुचित्र: एडविन बिन्नी तृतीय संग्रह से*। सैन डिएगो म्यूज़ियम ऑफ आर्ट।
7. रेनू कुमारी। (2010)। *मुगल लघुचित्र कला और उसका सामाजिक-धार्मिक महत्व*। *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ हिस्ट्री एंड कल्चर*, 6(2), 42–55।
8. शर्मा, पी. (2014)। *मुगल लघुचित्रों में दृश्यात्मक आख्यान*। *दक्षिण एशियाई अध्ययन पत्रिका*, 32(1), 65–79।
9. एशर, कैथलीन बी. (2007)। *1600 से पूर्व की मुगल कला*। *हेलब्रुन टाइमलाइन ऑफ आर्ट हिस्ट्री* में। द मेट्रोपोलिटन म्यूज़ियम ऑफ आर्ट।
10. संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार। (2012)। *मुगल चित्रकला की सूची*। राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली।

ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

11. ज़ारगर, हसीब। (2017)। *संरक्षक और चित्रकार: मुगल लघुचित्रों का संदर्भात्मक अध्ययन*। *इंडियन आर्ट हिस्ट्री रिव्यू*, 15(3), 121–137।

12. सिद्दीकी, एफ. ए. (2020)। *मुगल चित्रकला में प्रतीकवाद: एक व्याख्यात्मक अध्ययन*। *फाइन आर्ट्स एंड एस्थेटिक्स जर्नल*, 18(1), 29–41।

13. रिज़वी, रेहाना। (2015)। *मुगल कला में स्त्री और संरक्षण: नूरजहाँ की कलात्मक परियोजनाओं का अध्ययन*। *साउथ एशियन कल्चरल स्टडीज़*, 9(4), 90–103।

14. कुरैशी, अनीस। (2019)। *मुगल कला संरक्षण में तकनीकी हस्तक्षेप*। *इंडियन म्यूज़ियम स्टडीज़ जर्नल*, 11(2), 75–89।

15. इंटैक (INTACH)। (2021)। *मुगल पांडुलिपियों का डिजिटलीकरण और संरक्षण*। इंटैक वार्षिक संरक्षण रिपोर्ट।